प्रा.डॉ.बी.प्रतिभा जैन,
एम्.ए.(हिन्दी) एम्.ए.(समाजशास्त्र) पीएच्.डी.
महावीर महाविद्यालय, कोल्हापूर

प्रमाण पत्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रा०सौ. भारती वि. शेलेके ने मेरे निर्देशन में यह शोध प्रबन्ध एम्. फिल उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व योजनानुसार यह कार्य सम्पन्न हुआ है। जो तथ्य इस प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं।

दिनांक ११.४.८८

निर्देशिका
हिन्दी प्राध्यापिका,
महावीर महाविद्यालय, कोल्हापूर

प्र मा ण प त्र

मै यह प्रमाणित करती हूँ कि सौ. प्रा.डॉ. शशिप्रभा जैन जी के निर्देशन में मैंने यह शोध प्रबंध , एम.फिल. उपाधि के लिए लिखा है। इस प्रबंध में प्रस्तुत की गई सभी बातें मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

: प्रा.सौ.भारती वि.शेळके
(प्रा. भारती वि. चव्हाण.)

स्थळ: कोल्हापूर ।
दिनांक : ११: ४: १९८८

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या
१	भूमिका	१ - ३
२	प्रथम अध्याय	१ - २४
	परिवार - स्वरुप	
	व्युत्पत्यर्थ	
	परिभाषा	
	महत्व ।	
३	द्वितीय अध्याय	२५ - ३४
	राजेंद्र यादव	
	व्यक्तित्व एवं कृतित्व	
४	तृतीय अध्याय	३५ - ६७
	राजेंद्र यादव जी के उपन्यासों के कथावस्तुओं का संक्षिप्त परिचय	
	१) सारा - आकाश	
	२) उखड़े हुए लोग	
	३) कुलटा	
	४) शह और मात	
	५) अनदेखे अनजाने पुल	
	६) मंत्र-विध्द	
	७) एक इंच मुस्कान (सह्योगी उपन्यास)	

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या
५	चतुर्थ अध्याय	६८ - २११

क) राजेंद्र यादव जी के उपन्यासों में चित्रित परिवार का स्वरुप

ख) १) दाम्पत्य जीवन

अ) सफल दाम्पत्य जीवन

ब) असफल दाम्पत्य जीवन

ग) दाम्पत्येतर सम्बन्ध

१) पिता एवं सन्तान का सम्बन्ध

२) पिता एवं बेटी का सम्बन्ध

३) पिता एवं पुत्री का सम्बन्ध

४) माता एवं सन्तान का सम्बन्ध

५) माता एवं पुत्री का सम्बन्ध

६) भाईयों का पारस्परिक सम्बन्ध

७) भाई एवं बहिन का सम्बन्ध

८) सास एवं बहू का सम्बन्ध

९) ननद और भाभी का सम्बन्ध

१०) देवर - भाभी का सम्बन्ध

११) देवरानी - जेठानी का सम्बन्ध

घ) विवाह

पारिवारिक समस्याएँ

च) अ) वैवाहिक समस्याएँ

१) विवाह एक निरर्थक बन्धन

२) अविवाह

३) अनमेल विवाह

४) बालविवाह

५) अन्तर्जातीय एवं प्रेम विवाह

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या
	६) परम्परागत विवाह और प्रेम विवाह	
	ब) नारी समस्या	
	क) परित्यक्ता स्त्री-समस्या	
	ड) दहेज समस्या	
	इ) आर्थिक समस्या	
६	पंचम अध्याय	२१२ - २१८
	उपसंहार	
	संदर्भ सूचि	
	१) आधार ग्रंथ	२१९
	२) सहायक ग्रंथ	२१९ - २२०

भूमिका

भूमिका

महावीर महाविद्यालय, कोल्हापूर ,एम.फिल हिन्दी विभाग की छात्रा होने के नाते प्रस्तुत ' शोध - प्रबंध ' को पेश करते हुए मुझे हार्दिक खुशी हो रही है, इसका समूचा श्रेय मैं प्रथम महावीर महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. बी.बी.पाटील, डॉ.शशि प्रभा जैन एवं डॉ.सुनीलकुमार लवटे जी को देती हूँ। एम.ए.हो जाने के बाद हिन्दी के बहुत से अध्यापकों के सामने एम.फिल करने की समस्या निर्माण हो गयी थी, क्योंकि शिवाजी विश्वविद्यालय में एम.फिल.शिक्षा की सुविधा नहीं थी और हम प्राध्यापकों की इस असुविधा का सर्वप्रथम हल महावीर महाविद्यालय ने किया. इसलिए मैं महावीर महाविद्यालय की आभारी हूँ।

एम.फिल. छात्राओं के सामने विषय चुनाव की समस्या होती है लेकिन मेरे सामने वह अडचन नहीं आई। मेरी शोध मार्गदर्शिका डॉ.शशिप्रभा जैन जी ने बहुत से विषय मेरे सामने रखे। मुझे पहले से ही उपन्यास विधा में रुचि होने के कारण मैं ने इस विषय को चुना। आज के नये लोकप्रिय उपन्यासकार राजेंद्र यादवजी के सामाजिक उपन्यासों ने मुझे आकर्षित किया।

राजेंद्र यादव सफल उपन्यासकार एवं कहानीकार माने जाते हैं। साहित्य के विविध क्षेत्रों में आपने साहित्य लेखन किया और आज के साहित्य को नयी प्रगति की राह दिखाई ,आपका साहित्य यथार्थ के सार्थवाह, परंपराप्रियता की अंधी गली को प्रगति व प्रयोगों की ज्योति से जगमगानेवाला साबित हुआ। आपकी विशेषता यही रही है कि आपने पूरा जीवन साहित्य के लिए प्रतिबध्द किया, लेकिन किन्हीं फॉर्मलों के अनुसार दे-दना-दन कहानियाँ नहीं लिखी, बाहरी दबावों से मुक्त रहकर आपका लेखन स्तरीय एवं प्रामाणिक रहा है। इन्हीं विशेषताओं के कारण बडी लगन से मैं ने उनके साहित्यपर शोधकार्य

आरंभ किया । जब मैं सूक्ष्मता से यादवजी के उपन्यासों पर सोचने लगी, चिंतन करने लगी, तब मेरे सामने अनेक समस्याएँ निर्माण हो गई क्योंकि प्रतिभाशाली राजेंद्र यादव जी के साहित्यपर कम आलोचनाएँ लिखी गई एवं उनके साहित्यपर कम काम होने से संदर्भ ग्रंथ तथा अन्य सामग्री नहीं मिल रही थी, और बडे तूफान में नाविक की हालत जैसी डाँवाडोल होती है, उसी प्रकार कुछ मेरी हालत हो गई लेकिन ऐसे ही वक्त डॉ.शशिप्रभा जैन जी तूफान में राह दिखानेवाले मार्गदर्शक के समान मेरी सहायता करने आ गयी । निराशा से ग्रस्त हुए मेरे मन को आपने हौसला एवं उत्साह देकर मेरा मन प्रेरणासे भर दिया और मैं फिर से उसी काम में जुट गयी । किसी भी वक्त मैं डॉ.जैन जी के घर चली जाती तो आप मेरा स्वागत हास्य एवं प्रसन्न मुद्रा से करती और मुझे सीधी-साधी आसान भाषा में समझाती सो धीरे धीरे मेरी समस्याएँ हल होती गयी । मेरा यह सौभाग्य रहा कि आप जैसी प्राध्यापिका मार्गदर्शिका के रुप में मिल गई इसलिए मैं आपकी ऋणी हूँ।

राजेंद्र यादवजी से सम्बन्धित बहुतसी पुस्तकें टटोलने पर भी आपके साहित्यपर कोई शोधप्रबंध नहीं मिल पाया, इसलिए एक ऐसे साहित्यकार का साहित्य जो शोध की दृष्टि से अभीतक अनछुआ पडा था, उसपर कुछ कार्य करने की मेरी इच्छा जागृत हुई । आपके 'सारा आकाश' में चित्रित परिवार के स्वरुप ने मुझे बहुत आकर्षित किया । इसी कारण मैं ने 'राजेंद्र यादव के उपन्यासों में चित्रित परिवार' को ही अपने शोध का विषय बनाया ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का विस्तार से अध्ययन करते समय सुविधा की दृष्टि से इसे पाँच अध्यायों में विभाजित किया है ।

प्रथम अध्याय में परिवार का स्वरुप, व्युत्पत्ति, परिभाषा एवं महत्व के बारे में चर्चा की है ।

द्वितीय अध्याय में राजेंद्र यादव जी के जीवन एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । आपका जीवनपरिचय पुस्तकों में बहुत ही कम दिखाई

देता है आपकी रचनाओं को पढकर ही आपका जीवनपरिचय कुछ मिल पाया है उसी को यहाँ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय में आपके उपन्यासों का संक्षिप्त में समीक्षात्मक मूल्यांकन करते हुए कथावस्तुओंका परिचय दिया है। आपका सारा आकाश उपन्यास संयुक्त परिवार को लेकर लिखा गया है तथा अन्य उपन्यासों में एकाकी एवं आधुनिक परिवार है, इन्ही उपन्यासोंका संक्षिप्त परिचय दिया है।

चतुर्थ अध्याय में आपके उपन्यासों में पाये जानेवाले परिवारों की विस्तार से चर्चा की है तथा अध्ययन की दृष्टि से प्रस्तुत विषय को अलग अलग प्रकार से विभाजित किया है - जैसे राजेंद्र यादवजी के उपन्यासों में परिवार का स्वरुप, दाम्पत्य सम्बन्ध, सफल एवं असफल दाम्पत्य जीवन, विवाह वैवाहिक समस्या, नारी समस्या, परित्यक्ता नारी समस्या, आर्थिक समस्या आदि समस्याओं का विवेचन किया है। दाम्पत्येत्तर सम्बन्ध में विशेष रुप से नारी समस्या को लिया है।

पंचम अध्याय उपसंहार है, जो समूचे शोध प्रबंध का निचोड है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध पूरा करने में कमला महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. क्रान्तीकुमार पाटील जी ने पूरी पूरी सहायता की इस लिए मैं उनकी ऋणी हूँ।

इस समय मुझे तारारानी विद्यापीठ के संध्याध्यक्ष श्री.व्ही.टी. पाटील तथा पूजनीय काकाजीं का स्मरण हो रहा है जो सदैव मेरे इस शोध - प्रबंध के प्रेरक रहे हैं।

अंत में टंकलेखक श्री बाळकृष्ण रा.सावन्त, कोल्हापूर, इनकी मैं आभारी हूँ। आपने प्रस्तुत शोध-प्रबंध को अंतिम रुप देने में सहायता की।

स्थळ : कोल्हापूर :
तारीख : : : १९८८.

(सौ.भारती वि.शेळके)
(भा.वि. चव्हाण)